मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MHD-23

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिन्दी)
(एम. एच. डी.)
सत्रांत परीक्षा
दिसम्बर, 2020
एम.एच.डी.-23 : मध्यकालीन कविता—1

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

***नोट : प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) भादों मास निसि भई अँधियारी। रैन डरावन हौं धनि बारी॥
बिजलि चमक मोर हियरा भागै। मंदिर नाह बिनु डहि डहि लागै॥
संग न साथी न सखी सहेली। देखि फाटि हिय मंदिर अकेली॥
तिहि दु:ख नैन फूटि निसि बहै। धरती पूरि सायर भर रहे॥
निकर चलउँ पौं चली न जाई। भुई बूड़ि रहा जल छाई॥
दुरजन बचन स्रवन कै, लोर बिदेसहि छायउ॥
नीर लाइ नैन दुइ बरखा, सिरजन रोइ बहायउ॥

(ख) दीन दु:खी के हेत जउ, बारै अपने प्रान।
रैदास उह नर सूर कौ, साँचा छत्री जान॥

(ग) मैं दुहिहौं मोहिं दुहन सिखावहु।
कैसे गहत दोहनी घुटुवनि, कैसे बछरा थन लै लावहु।
कैसैं लै नोई पग बाँधत, कैसैं लै गैया अटकावहु।
कैसै धार दूध की बाजति, सोइ सोइ विधि तुम मोहिं बतावहु।
निपट भई अब साँझ कन्हैया, गैयनि पै कहुँ चोट लगावहु।
सूर स्याम सौं कहत ग्वाल सब, धेनु दुहन प्रातहि उठि आवहु॥

(घ) आवत लाल गुपाल लिए मग सूने मिली इक नार नवीनी।
त्यों रसखानि लगाइ हिये भट मौज कियो मनमाहिं अधीनी॥
सारी फटी सुकुमारी हटी अँगिया दरकी सरकी रँगभीनी।
गाल गुलाल लगाइ कै अंक रिझाई बिदा कर दीनी॥

2. 'चंदायन' की भाषागत विशिष्टताओं का विश्लेषण कीजिए। 10

3. भक्तिकाल के सन्दर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की मान्यताओं का विश्लेषण कीजिए। 10

4. भक्तिकालीन प्रमुख कृष्णभक्त कवियों का परिचय दीजिए। 10

5. सूरदास के वात्सल्य वर्णन की विशिष्टता पर विचार कीजिए। 10

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

$2 \times 5 = 10$

(क) भक्तिकाव्य में मध्ययुगीनता

(ख) नंददास

(ग) 'चंदायन' में प्रेम तत्व

(घ) रसखान का मुक्तक काव्य